The Resource Centre

Patrika

Date: 18/09/2016 Page No: 10 Location: Main Circulation: 30000

Edition: Bhopal

Myths about life insurance

कन्फ्यूजन...

जीवन बीमा के बारे में ये हैं मिथक

वी विश्वानंद
मैक्स लाइफ इंश्योरेंस के सीओओ और सीनियर डायरेक्टर

क्या हम ऐसे देश में रह रहे हैं, जहां हमें सामाजिक सुरक्षा प्राप्त हैं? या क्या हम इस दिशा में गंभीरता के साथ आगे बढ़ रहे हैं? दोनों सवालों के जवाब ना में हैं। पिछले साल, भारत सरकार ने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना लॉन्च की। पहली दो पूरी तरह से सुरक्षा योजनाएं हैं, जबकि तीसरी दीर्घकालिक जरूरत से जुड़ी रिटायरमेंट प्लान है। इन सरकारी पहल से यह भी स्पष्ट है कि सुरक्षा और दीर्घकालिक बचत को प्रोत्साहित करने के लिए अभी काफी कुछ करने की जरूरत है। जीवन बीमा इन दोनों जरूरतों को बहुत अच्छी तरह से पूरा करता है। हालांकि जीवन बीमा के संबंध में कई भ्रांतियां भी हैं, जो इस वित्तीय उपाय के दीर्घकालिक बचत और सुरक्षा टूल के उपयोग में आड़े आती हैं। ऐसे में जीवन बीमा से जुड़ी मिथ्याओं को अच्छी तरह समझने की हमें जरूरत है।

मिथक 1
मैं अविवाहित हूं और मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं

ज्यादातर 22-30 साल के आयु वर्ग के अविवाहित लोगों का मानना है कि उन पर कोई आश्रित नहीं है, क्योंकि ज्यादातर मामलों में उनके माता-पिता जीवित और सक्रिय हैं और वे कमा रहे हैं। उन्हें यह अहसास नहीं होता है कि उनके माता-पिता सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय मदद के लिए उन पर निर्भर रह सकते हैं। यदि बीच में कोई अनहोनी हो जाती है तो वे या उनके माता-पिता सेवानिवृत्ति के बाद अपनी वित्तीय जरूरतें कैसे पूरी करेंगे। इसीलिए मुकम्मल सुरक्षा जरूरी हो जाती है।

मिथक 2
जीवन बीमा बुजुर्गों के लिए है

जीवन बीमा से जुड़ा एक और मिथक यह है कि 'मैं इंतजार कर सकता हूं, मैं अभी जीवन बीमा के बारे में सोचने के लिए बूढ़ा नहीं हुआ। दरअसल, सच्चाई इसके उलट है। आपकी जितनी कम उम्र है, उतनी ही अधिक जिम्मेदारियां आपको पूरी करनी है। इसलिए सुरक्षा और बचत की आपको अधिक जरूरत है। इस उम्र में आप पर अपने परिवार को बेहतर जीवनशैली के साथ बच्चों को उचित शिक्षा देने की भी जिम्मेदारी है। यदि आप युवावस्था में जीवन बीमा की शुरुआत करते हैं तो आपके प्रीमियम की दर कम होगी।

10 गुना होना चाहिए वार्षिक आय का लाइफ कवर

मिथक 3
ऑनलाइन खरीद फायदेमंद होती है

अगर आपको बगैर किसी मदद के रिसर्च करने, सही विकल्प का चुनाव करने, प्रीमियम अदा करने और दावे प्रबंधन से जुड़े मामलों की सही समझ और योग्यता है तो ऑनलाइन पॉलिसी खरीदना आपके लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। हालांकि इससे आप सर्विस से महरूम रह जाते हैं। ऑनलाइन पॉलिसी का प्रीमियम थोड़ा कम जरूर होता है, लेकिन अगर आपको प्रीमियम की खरीद से लेकर उसके बाद हर स्तर पर सर्विस और सपोर्ट चाहिए तो फिर थोड़ा अधिक प्रीमियम चुकाकर एजेंट व एडवाइजर के जरिए पॉलिसी लेना ही बेहतर रहता है।

मिथक 4 : जीवन बीमा सिर्फ टैक्स बचत के लिहाज से ही सर्वश्रेष्ठ

फाइनेंशियल एसेट्स में निवेश करते वक्त मकसद साफ रहना चाहिए। इनमें निवेश के मकसद अलग-अलग होते हैं। जीवन बीमा की खरीद हमेशा दीर्घकालीन लाभ और सुरक्षा के लिए की जानी चाहिए। इस प्रक्रिया में मार्केट रिटर्न पर नजर नहीं होनी चाहिए। इनकम टैक्स छूट आपके लिए महज बोनस की तरह है।

मिथक 5 : नियोक्ता या क्रेडिट कार्ड के जरिए प्राप्त लाइफ कवर पर्याप्त है

इम्प्लॉयर यानी नियोक्ता या फिर क्रेडिट कार्ड्स जैसे प्रोडक्ट्स के जरिए मिलने वाला ग्रुप लाइफ कवर अक्सर पर्याप्त नहीं होता। इन कवर पर पूरी तरह से निर्भर नहीं रहना चाहिए। वास्तव में लाइफ कवर आपकी वार्षिक आय का 10 गुना होना चाहिए। जबकि ग्रुप लाइफ इंश्योरेंस के तहत आपको इतनी राशि का कवर नहीं मिलता है।

मिथक 6 : पत्नी या बच्चे के नाम से बीमा खरीदने में देना होता कम प्रीमियम

कई बार लोग जीवन बीमा खरीदते वक्त डिस्काउंट के जाल में फंसकर छोटे बच्चों और महिलाओं के नाम से बीमा ले लेते हैं। ऐसे मामलों में मॉर्टेलिटी चार्जेज कम होते हैं, क्योंकि इनकी जीवन प्रत्याशा अधिक होती है। इससे प्रीमियम थोड़ा कम जरूर हो जाता है, लेकिन इसका घाटा यह है कि परिवार के कमाऊ व्यक्ति को पर्याप्त सुरक्षा नहीं मिलती।

Copyright of the article is with the publication